टीच फ़ॉर अमेरिका

मौलिक डी. बरकाना

एक अमेरिकी राजनयिक के न्यू यॉर्क के एक विद्यालय के अनुभव।

अमेरिकी विदेश सेवा की नौकरी शुरू करने से पहले ही मैं दो बरस एक ''कठिन कार्य'' संभाल चुका था- न्यू यॉर्क सिटी के पांच प्रशासनिक क्षेत्रों में से शायद सबसे बीहड़ ब्रांक्स के थियोडोर रूज़वेल्ट गैदिंग्स मिडिल स्कूल में जूनियर हाइस्कूल की कक्षा को पढ़ाना। यूनिवर्सिटी ऑफ़ ऑरेगॉन से स्नातक उपाधि पाने के बाद मुझे टीच फ़ॉर अमेरिका कार्यक्रम के अंतर्गत एक कम साधन-सम्पन्न, कम अध्यापकों वाले शहरी स्कूल में दो बरस पढ़ाने के लिए चुन लिया गया। मुझे अध्यापकों के वेतनमान का प्रारम्भिक वेतन मिलता था जिसके बूते काफी किफायतशारी से खर्च करने पर भी न्यू यॉर्क में गुज़ारा चलाना मुश्किल होता था। मैं रोज सातवीं और आठवीं कक्षाओं के 30 से अधिक छात्रों की 90-90 मिनट की कक्षाओं को अंग्रेजी पढ़ाता था। यह बहुत चुनौती भरा और कठिन काम था। अब सवाल यह उठता है कि मैं और मेरे जैसे हज़ारों स्नातक बढ़िया नौकरियों और आकर्षक वेतन को छोड़कर इस तरह के कामों से क्यों जुड़ते हैं?

मेरे (और मैं मानता हूं कि मेरे बहुत से टीच फ़ॉर अमेरिका साथियों के भी) मामले में इसका कारण जोस जैसे बच्चे हैं। सभी अध्यापकों की कक्षाओं में जोस होते हैं। नौ महीनों में जोस ने उल्लेखनीय प्रगति की थी। 14 बरस का सातवीं कक्षा का यह छात्र अपनी आयु के बच्चों से औसतन दो बरस पीछे चल रहा था। उसे पढ़ने में कठिनाई होती थी और शुरू में उसे मेरी कक्षा और प्रयास पागलपन लगते थे। कई महीनों के प्रयासों के बाद जोस ने पढ़ने में कुछ प्रगति की, अपनी बात अपने जर्नल में लिख कर अभिव्यक्त करने में भी उसे मजा आने लगा।

मैं एक चुनौतीभरे वातावरण में सकारात्मक बदलाव लाना चाहता था और ऐसे में जोस की प्रगति ने मुझे निजी और व्यावसायिक स्तर पर प्रेरित किया। व्यावहारिक रूप से देखें तो अध्यापन के पेशे में सार्वजनिक भाषण, नियोजन और यहां तक कि कूटनीति जैसे कई ऐसे कौशल शामिल हैं जो व्यवसाय के और क्षेत्रों में भी राहें खोल सकते हैं। अंग्रेजी के अध्यापक के तौर पर काम शुरू करने से पहले मैं सोचता था कि मेरा दिन वाक्यों के व्याकरणात्मक विश्लेषण, अनुच्छेद लिखना सिखाने, पाठ को पढ़ना और उस पर अनुक्रिया करना सिखाने में बीतेगा। लेकिन काम शुरू करते ही समझ में आ गया कि मेरे सामने सबसे बड़ी चुनौती कक्षा का प्रबन्धन है। कक्षा का वातावरण अगर सीखने की प्रक्रिया के अनुकूल न हो तो शैक्षणिक लक्ष्यों की प्राप्ति कठिन होती है। दो बरस मैं अच्छा अध्यापक बनने के लिए हाथ-पैर मारता रहा। मैं निश्चित रूप से यह तो नहीं कह सकता कि मैं यह महान लक्ष्य पा सका या नहीं लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि टीच फ़ॉर अमेरिका कार्यक्रम के माध्यम से मैं अपने छात्रों के जीवन में सकारात्मक अंतर ला पाया।

टीच फ़ॉर अमेरिका कार्यक्रम के केंद्रीय मूल्य मानते हैं कि बढ़िया शिक्षा जीवन को सुचारू रूप से चलाने में सहायक होती है, और हर छात्र को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिलनी ही चाहिए। अपने ही ढंग से अमेरिका में शैक्षणिक सुधार के क्षेत्र में सफलता की कथा लिखकर टीच फ़ॉर अमेरिका एक अनुकरणीय उदाहरण बन गया है। प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी की स्नातक वेंडी कॉप द्वारा 1990 में शुरू यह कार्यक्रम अमेरिका के शीर्षस्थ विश्वविद्यालयों के अभिजात छात्रों के लिए सबसे लोकप्रिय कार्यक्रमों में से एक बन गया है। हाल के वर्षों में देश के सबसे कम साधन-सम्पन्न विद्यालय क्षेत्रों में अध्यापकों के 6000 पदों के लिए औसतन 20,000 छात्रों के आवेदन मिलते रहे हैं। अब तक टीच फ़ॉर अमेरिका कार्यक्रम के माध्यम से 30 लाख से भी अधिक छात्रों को लाभ मिला है।

यह कार्यक्रम इतना लोकप्रिय क्यों है? आदर्शवाद अमेरिकी युवाओं को बहुत आकर्षित करता है। समुदाय से उऋण होने की प्रवृत्ति बहुत प्रबल है। अमेरिका में 62 प्रतिशत कॉलेज छात्र किसी न किसी तरह की स्वयंसेवी गतिविधि से जुड़े हैं। यहां असम्भव नहीं तो कम से कम कठिन कार्य को सम्पन्न करने की चुनौती बहुत वास्तविक है।

कार्यक्रम उत्साही युवा स्नातकों को अमेरिकाभर के कम साधन-सम्पन्न स्कूलों में भेजता है जहां वे छात्रों को उनके निजी शैक्षणिक जीवन में आ रही बाधाओं के बावजूद सीखते रहने को प्रेरित करते हैं। सच तो यह है कि टीच फ़ॉर अमेरिका कार्यक्रम के कई पूर्व स्वयंसेवक या तो अध्यापक बन गए हैं या शैक्षणिक प्रशासक और कुछ ने तो अपने स्कूल खोल लिए हैं।

ब्रांक्स के उस स्कूल में सिर्फ मेरे छात्रों ने ही नहीं सीखा, मैंने भी अमेरिका की शिक्षा प्रणाली के बारे में, शहरी गरीबों की रोज़मर्रा की कठिनाइयों के बारे में जाना, और जाना कि कैसे सेवा या स्वयंसेवकत्व की भावना एक ज़रूरतमंद समुदाय में सकारात्मक बदलाव ला सकती है। इससे भी बढ़कर मैंने जोस से सीखा कि शिक्षा कैसे सामाजिक न्याय का पोषण करती है, युवाओं को सफलता के लिए आवश्यक कौशल देकर उन्हें सामर्थ्यसम्पन्न बनाती है। यह सीख सदा मेरे जीवन को राह दिखाएगी।

अमेरिका की शिक्षा मंत्री मार्गरेट स्पेलिंग्स और फ़र्स्ट लेडी लॉरा बुश अप्रैल 2008 में टीच फ़ॉर अमेरिका की दसवीं वर्षगांठ के मौके पर वाशिंगटन, डी.सी. के मार्टिन लूथर किंग प्राथमिक विद्यालय में पहली ग्रेड के बच्चों के साथ।

जे. स्कॉट एपलवहाइट © ए.पी. डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

मौलिक डी. बरकाना *कोलकाता में यू.एस. कांसुलेट में असिस्टेंट कल्चरल अफ़ेयर्स ऑफ़िसर हैं।*

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।